दिल्ली सल्तनत
(1206-1526)

- उत्तरी भारत के अंतिम तुर्क विजेता मोहम्मद गौरी की कोई संतान नहीं थी।
- वह बड़ी संख्या में अपने साथ दास लाया था जिन्हें उसने अपने अधिकारियों के रूप में नियुक्त किया।
- 1206 में मोहम्मद गौरी की अचानक मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने लाहौर में स्थानीय नागरिकों के अनुरोध पर सत्ता ग्रहण की।

ममलूक वंश (1206-1290)

- इतिहासकार हबीबुल्लाह ने इन्हें ममलूक शासक कहा है।
- इनमें से प्रत्येक स्वतंत्र माता-पिता की संतान थे इस कारण इन सुल्तानों को गुलाम वंश की सुल्तान कहने के स्थान पर प्रारंभिक तुर्क सुल्तान या ममलूक सुल्तान कहना अधिक उपयुक्त है।
- शासकों का क्रम निम्न प्रकार हैं-

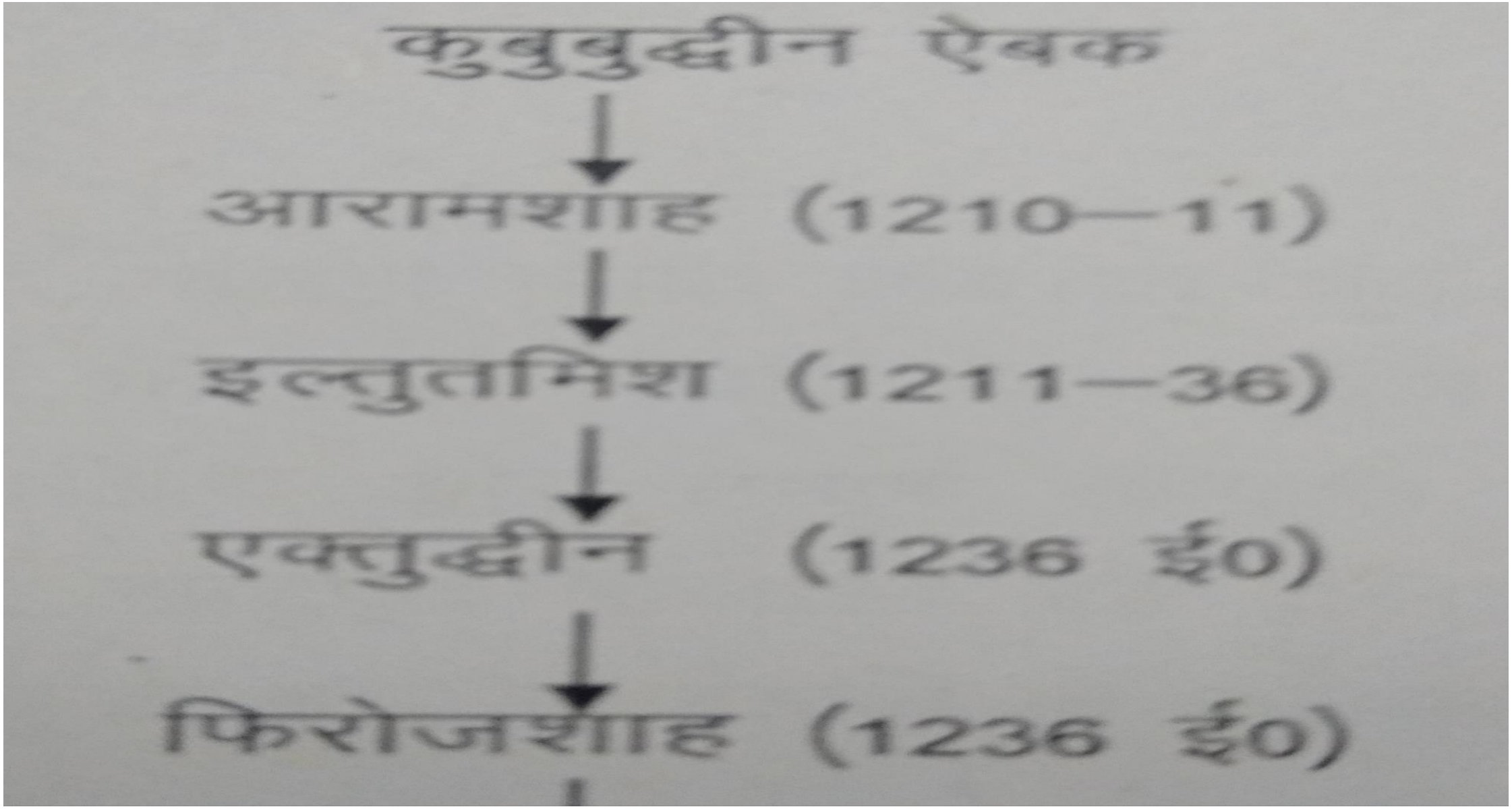

कुतुबुद्दीन ऐबक

↓

आरामशाह (1210—11)

↓

इल्तुतमिश (1211—36)

↓

एक्तुद्दीन (1236 ई०)

↓

फिरोजशाह (1236 ई०)

↓

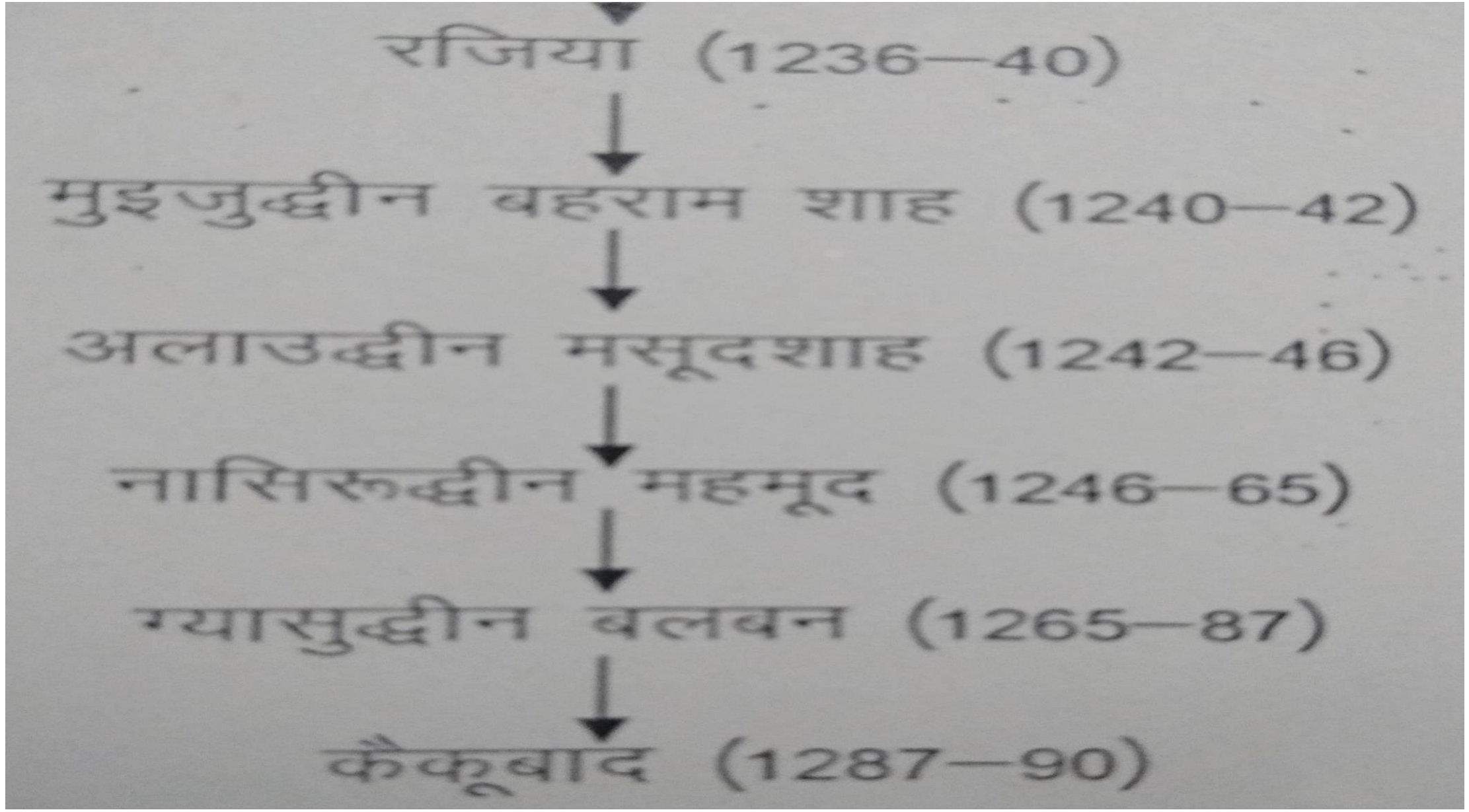
रजिया (1236—40)
मुइजुद्धीन बहराम शाह (1240—42)
अलाउद्धीन मसूदशाह (1242—46)
नासिरूद्धीन महमूद (1246—65)
ग्यासुद्धीन बलबन (1265—87)
कैकूबाद (1287—90)

कुतुबद्दीन ऐबक(1206-1210)

- उपाधि-लाख बक्स, कुरान खां
- तराइन के द्वितीय युद्ध के बाद गौरी ने ऐबक को भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया
- कुतुबद्दीन ऐबक भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक था।

- वह दिल्ली का प्रथम तुर्क शासक था जिसने सिंहासन पर बैठने पर सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि मलिक और सिपहसालार की पदवीओं से ही संतोष रहा।
- उसे दासता से मुक्ति 1208 में मिली।
- उसने अपनी राजधानी लाहौर से ही शासन किया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने हसन निजामी और फक्र ए मुदबिर को संरक्षण प्रदान किया।

- उसने सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर दिल्ली में कुतुब मीनार की नींव रखी जिसे इल्तुतमिश ने पूरा कराया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में कुब्बत उल इस्लाम मस्जिद का निर्माण कराया।
- अजमेर में एक मस्जिद अड़ाई दीन का झोपड़ा निर्माण कराया है।

- 1210 में चौगान खेलते समय घोड़े से अचानक गिर जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की अचानक मृत्यु के बाद एक बार पुनः उत्तराधिकार की समस्या उत्पन्न हो गई।
- सैनिक वर्ग के संतोष , साधारण जनता को शांत रखने, उपद्रवियों को रोकने के लिए अमीरों ने आराम शाह को गद्दी पर बैठाया।
- आराम शाह एक कमजोर व अयोग्य शासन सिद्ध हुआ।

- ऐसे कठिन समय में तुर्क राज्य को एक योग्य अनुभवी शासक की आवश्यकता थी ऐसी स्थिति में दिल्ली के सरदारों ने इल्तुतमिश को सुल्तान का पद स्वीकार करने के लिए आमंत्रित किया।
- उस समय बदायूं का सूबेदार/अक्ता दार था

इल्तुतमिश(1211-36)

- इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का दामाद एवं बदायूं का अक्तादार था।
- यह दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक था।
- दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने खलीफा से अधिकार पत्र प्राप्त किया।
- दिल्ली सल्तनत का प्रथम वैधानिक सुल्तान था।
- इल्तुतमिश ने अपने सिक्कों पर अपने लिए खलीफा का दूत प्रदर्शित किया।

- **<u>इल्तुतमिश की मुख्य विजय</u>**-
- 1226 में बंगाल विजय
- 1226 में इल्तुतमिश ने रणथंबोर और मंदसौर पर अधिकार।
- 1231 में इल्तुतमिश ने ग्वालियर पर अधिकार।
- 1234-35 में इल्तुतमिश ने मालवा की विजय।
- इल्तुतमिश ने 1236 में बामियान अभियान किया खोखरा के विरुद्ध यह उसका अंतिम अभियान था

शासन का गठन

- इल्तुतमिश में चालीस अमीरों एक दल / turkan e chihalgani का गठन किया।
- भारत में इक्ता प्रणाली को संगठित किया ।
- एक्ता का अर्थ भूमि है।
- एक्ता भू राजस्व क्षेत्र था जो सैनिक या अमीरों किसी को भी दिया जा सकता था।
- इल्तुतमिश ने पहली बार शाही सेना के गठन का विचार रखा
- सभी के न्याय के लिए राजधानी और सभी नगरो में काजी और अमीर ए दाद की नियुक्ति की।

- प्रथम शासक जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाए
- उसने चांदी का टांका और ताबा का जीतल चलाया
- चांदी का टांका 175 ग्रेन था।
- भारत में प्रथम मकबरा का निर्माण इल्तुतमिश ने कराया। उसने नसीरुद्दीन महमूद की कब्र पर 1231 में सुल्तान गढ़ी नामक मकबरा बनवाया।
- दिल्ली में एक मदरसे की स्थापना की जिसका नाम मदरसा ए मुइज्ज्जी रखा।

- व्यक्तिगत जीवन में स्थित में अत्यधिक धार्मिक प्रवृत्ति वाला व्यक्ति था।
- सूफी संतों जैसों से कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी,काजी हमीदुद्दीन नागौरी, शेख बहाउद्दीन जकारिया का आदर करता था।
- शेख बहाउद्दीन जकारिया की सहायता से उसने मुल्तान पर विजय प्राप्त की।

- इल्तुतमिश ने ग्वालियर अभियान के बाद अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया।
- रजिया को उत्तराधिकारी मनोनीत करने से पूर्व तुर्कों के बीच किसी महिला के शासक के रूप में कार्य करने का कोई उदाहरण नहीं था।
- उलेमा वर्ग ने इसे शरीयत के विरुद्ध माना।
- राजपरिवार में रजिया के विरुद्ध षड्यंत्र प्रारंभ हो गया।
- उसकी सौतेली मा शाह तुर्क अन ने अपने पुत्र रुकनुद्दीन फिरोजशाह को शासक बनाने के लिए षड्यंत्र रचा।